गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
453

ओं तत्सत्

पाखण्डतिमिरनाशक पत्रचन्द्रिका

आगरा

६२०६
५-३-५५

नगरे विद्यारत्नाकर यंत्रे
मुद्रिता सम्वत् १९३५ ॥

भूमिका

(१) धन्य है वह श्रीजगदीश्वर कि जिस ने अपनी परम कृपालुता से पाखण्डतिमिराक्रान्त वेदप्रतिपादित मत के द्योतनार्थ सकल श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज स्वरूपी सूर्य को निर्माण किया है॥ इनका प्रतापातप जो सारे भरतखण्ड में एक मुद्दत से प्रकाशमान था वह अब बाक़ी रहे सब भूखण्डों में भी विस्तृत हो चला है॥ यह बात मनुष्य(३)मात्र पर स्पष्ट होने के लिये प्रशंसित महाशय के समीप आमेरिका महाद्वीपस्थ बडे २ धुरंधर विद्वज्जनों की सभा के भेजे हुए उन ८ पत्रों का (कि जिन की प्रथम एक प्रति अंगरेज़ी में और दूसरी उर्दू में हरफ़ ब हरफ़ तर्जुमा होकर छप चुकी है) पृथक २ खुलासा रूप तर्जुमा नागरी में करके छपवाया जाता है उस को देख कर हमारे देश निवासी ज़रा जाग्रत होवें तो ज़रूर कामना चतुष्टय पावें॥ (४)

अथ आमेरिका देशीय सत्सभा सद् सभा नियमार्थाः लिख्यते

(१) मिथ्यामत रूपी अंधकार से घिरे हुए वैदिक मत को चमकाने वा दिखलाने के लिये॥

(२) शास्त्र में सब छः श्री को षडैश्वर्य अथवा भग कहते हैं उसी से भगवान यह नाम बना है॥

(३) वेद और सिद्धांत शिरोमणि आदि ज्योतिष शास्त्र के महत ग्रन्थों से स्पष्ट है कि यह पृथ्वी चल और गोलाकार है उस के परिज्ञान के लिये इस भूगोल को एक ठोस घडे के सदृश मानो और उसके मुखस्थान पर देश आर्यावर्त्त और अधोभाग अर्थात् पेंदी के ठौर मुल्क आमेरिका बसा हुआ जानो विचक्षण लोग इस को पाताल अथवा नागलोक भी कह सकते हैं निश्चय किया जाता है कि इसी मुल्क की किसी राज कन्या को अर्जुन ब्याह

(१) सभा शहर न्यूयार्क में सन् १८७५ ई० में स्थापित हुई
(२) उस के अफ़सर ये हैं एक सभापति दो नायव सभा पति दो चिट्ठी पत्री लिखने वाले सिकर्टरी अर्थात् मुंशी एक ख़ज़ानची एक मुहाफ़िज़ दफ़्तर बाक़ी सब मेम्बर लोग
(३) पहिले इस सभा में सब प्रकार के लोग शामिल थे लेकिन पीछे से कुछ अनुभव के साथ उस के कायदों की तबदीली कुपी रीति से की गई॥
(४) उस के मेम्बर कारकुन चिट्ठी पत्री लिखने वाले लोग प्रतिष्ठित नाम कर के प्रसिद्ध हैं केवल इस में वह लोग भरती होते हैं जो कि उस के अभीष्टार्थों से अति प्रीति रखते हैं और तन मन से उस की तरक़्क़ी करने में सहायक होते हैं॥
(५) सभा के मेम्बर लोगों के तीन हिस्से किये गये हैं और प्रत्येक हिस्से के तीन २ दर्जे हैं॥ तीसरे हिस्से के तीसरे दर्जे में बिलकुल नये उम्मेदवार मेम्बर इम्तहानन दाखिल होते हैं वहां से ऊपर अदना से आला दर्जे तक अपनी योग्यतानुसार तरक़्क़ी पाते हैं और इस तरक़्क़ी के लिये कोई म्याद मुक़र्रर नहीं है हां वेशक पहिले हिस्से के प्रथम दर्जे में दाखिल होने के लिये खुदापरस्त मेम्बर इस बात से रहित हो कि उसको किसी तर्ज़ मज़हब की तरफ़ किसी प्रकार का मेल जोल और तरफ़दारी और किसी तरह की क़ैद मुल्क व देश व ज़ात पांत

लाये थे कि जिस को नाग कन्या करके प्रसिद्ध किया था॥
(७) यहां हद समाप्त है

व कुल और राज काज अथवा भाई बंदी आदि की न हो और ज़रूरत आपड़े तो इस श्रेष्ठ काम के लिये अपनी ज़िन्दगी अर्थात् प्राणों को खुशी के साथ निछावर कर देवें और वह शराब आदि किसी प्रकार का नशा भी न करता होवे और निहायत पवित्रता से रहना क़बूल करे॥ जो लोग ज़ात पांत व कुलाचार और मज़हब की तरफ़दारी तथा खुद गरज़ी की गुलामी से अभी तक बिल कुल नहीं छुटे परंतु उन्हों ने कुछ तरक्की इस श्रेष्ठ काम के विचार में करली है वे अपनी २ योग्यतानुसार दूसरे हिस्से में रक्खे गये हैं। तीसरे हिस्से के सब दरजों में केवल उम्मेदवार लोग इम्तहानन भरती होते हैं इन तीनों प्रकार के मेम्बरों को इख़्तियार है कि चाहे जब सभा से जुदे हो जावें लेकिन जो शरतें उन्हों ने दाख़िल होने के समय अंगीकार की हैं उन को पीछे से भी पालें॥

(६) इस सभा के मनोरथ बहुत हैं वह चाहती है कि उस के मेम्बर ईश्वर की कुदरतों से और ख़ास कर उन बातों से कि जो अक़ल से बाहर हैं बख़ूबी जानकार हों क्योंकि सृष्टि पैदा करने वाले का उत्तम निमूना यावज्जीवों में यही एक मनुष्य है इस के लिये उसको उचित है कि अपनी बनावट के तमाम छुपे हुए अद्भुत और अति सूक्ष्म गुणों को प्रकाशित करें और जो कि वह अपने शरीर से वैसे और कितनेही रूप अगाड़ी को पैदा करने वाला और अनेक ऐसे गुणों का कि जिन की भविष्यत् कैफ़ियत पेश्तर से किसी को मालूम नहीं हो सक्ती प्रसिद्ध करने का पूरा अधिकारी है इस कारण उस को वि

श्रेष तर लाज़िम हैं कि मनुष्य शरीर और अंतःकरण में पैदा करने वाले की सारी क़ुव्वतों को जहां तक जान सके जाने और इस तमाम जानकारी की अपने में छुपी हुई तमाम अपनी शक्तियों को बढाने की कोशिशें करें और आपु को चुम्बक व बिजली आदि दीगर २ क़िस्म के पदार्थों की क़ुव्वतों के अति सूक्ष्म छुपे व ग़ैर छुपे गुणों का गवाह प्रसिद्ध करे सभा बतलाती(१) और उम्मेद करती है कि उसके मेम्बर लोग अपनी ज़ात को बहुत आला दर्जे की शिक्षा व सत्य व सर्व श्रेष्ठ धर्म का उदाहरण प्रकाशित करें और समस्त नास्तिकों के समस्त निश्चयों और ख़ास कर ईसाई मत को कि जिस को सभा के सरदार विशेष कर बुरा(२) कहते हैं जड़ से उडा देवें॥ और मुद्दत से दबेहुए परमश्लाघ्य वैदिक मत को पश्चिम के सब मुल्कों में फैलावें और उसका अच्छी तरह से निश्चय दिलावें और जहां तक हो सके पादरी और ईसाई लोगों की उपदेश संबंधी कोशिशों को तमाम दुनियां से नेस्तनाबूद कर दें॥ और जिन को वे लोग क़ाफ़िर व बुतपरस्त कहकर ईसाई हो जाने के लिये बहकाते और धोखे में डालते हैं उन्हीं का मत जो ज़माने क़दीम से नादिर वेदादिक ग्रन्थों की तालीम से जानाजाता और जिस की चमक को दीगर कोई भी मज़हब नहीं पाता ऐसा सत्य विश्वास सब को करा देवें और दुनियां के सब लोगों को अपना भाई समझ कर मदद दें और वेदादिक सत्य ग्रन्थों के नेक और पाक फलों को हासिल करें॥

(१) अपने तईं (२) बड़े तारीफ़ी

(७) इस सभा में औरत व मर्द दोनों दाखिल हो सक्ते हैं॥
(८) इस असल सभा की शाखें पूर्व व पश्चिम के मुल्कों में बहुत सी जारी हैं॥
(९) इस सभा में किसी मेम्बर से फ़ीस नहीं ली जाती अगर किसी का जी चाहे तो वह ख़र्च की मदद भलेई करे कोई उम्मेदवार व लिहाज़ दौलत व इख़्तियारात भरती नहीं होता और न कोई इस सबब से कि वह ग़रीब और ग़ैर प्रसिद्ध है ख़ारिज किया जाता है॥ असल सभा के साथ लिखा पढ़ी इस पते से करनी चाहिये (थ्यू सू फ़िकिल सुसाइटी न्यूयार्क ब्राडवे नम्बर ७१ शहर न्यूयार्क मुल्क अमेरिका)

(१ पत्री)

१८ फ़रवरी सन् १८७८ ईसवी

बनाम महाराजाधिराज श्री स्वामी पंडित दयानन्द सरस्वती जी मुल्क आर्यावर्त्तस्थ, स्वामी जी महाराज चंद लोग अमेरिका व और २ देश निवासी (१) तालिबइल्म जो कि इल्म परमेश्वर व आत्मज्ञान होने का अत्यंत शौक़ रखते हैं वे अपने आप को आप के चरणों में डाल कर यह प्रार्थना करते हैं कि आप उन का उद्धार करें॥ यदिच वे अन्य २ देश निवासी और पृथक २ पेशा व नौकरी करने वाले हैं लेकिन सब के सब एक ही मनोरथ सिद्ध करने और उन्नमोत्तम हो जाने के लिये दृढ़ चित्त हो संमिलित व मुसम्मत हैं इसी कारण तीन बरस पेशतर से उन्हों ने अपनी एक सभा स्थापित की है और उस का नाम परब्रम्ह परिज्ञान समाज रक्खा है॥ जो कि उन्हों नें अपने ईसाई मत

(१) विद्यार्थी

में ऐसी कोई बात न देखी कि जिस से स्वार्थ व परमार्थ ज्ञान प्राप्त करके अपना चित्त संतुष्ट करते बल्कि हर चहार तरफ़ से(१) खराब करने वाले उस के निश्चयों के अति बुरे फल देखे और ऐसे बड़े २ पादरी आदि पाये कि ज़ाहर परस्त(२) और घाऊ घप्प और बुद्धि नाशक हैं उन पर विश्वास लाने वाले लोग भी बहुत बुरी रीति व अपवित्रता से काल क्षेप करते हैं और यह भी देखा गया कि पादरी लोग भलाई व दानाई को ताक में रख कर दोषों को छुपाते और अयवों को मुआफ़ करदेते हैं जो कि उन की ये सब हालतें इन मुलकों के मनुष्य मात्रों को खराब खिस्ता करने वाली हैं लाचार हम उन के मत से जुदे होकर रोशनी पाने के लिये हिन्दुस्तानाभिमुख(३) होते हैं हमने अपने तईं खुले मैदान पुकार कर ईसाई मत का दुश्मन प्रसिद्ध कर दिया है हमारे इस चलन व साहस को देख सब नज़र हमारी तरफ़ से फिर गई अर्थात् बड़े २ वे अधिकारी व अखबार नवीस (कि जिन की भ्रष्ट बुद्धि और विषयासक्त(४) प्रकृति है और ईसाई मत भिन्न मत वालों से द्वेष रखते हैं) हम को धिक्कार देते औ भ्रष्ट व काफिर व गमार कहते हैं हमने १८ महीना पेश्तर के मरे हुए आदिमी की लाश को क़बर से निकाल कर पुराने पुरखों यानी आर्य्यों की रीति से जलाया हम केवल तरुण आदिमियों की ही सहायता नहीं चाहते बल्कि उन की चाहते हैं कि जो बड़े दाना

(१) आसमन्तात्
(२) देखने मात्र के पुजारी
(३) साम्हने
(४) ऐश में डूबी हुई तबियत ॥

और ब्रह्मनिष्ठ हैं॥ इसलिये हम आप के चरणों में इस तरह सिर नवाते हैं जैसे कि बच्चे मा बाप के पैरों पर गिरते हैं और कहते हैं कि अय हमारे गुरू हमारी ओर देखिये और बतलाइये कि हम क्या करें और हम को अपनी सिक्षा व सहायता पात्र बनाइये॥ यहां लाखों आदमी ज्ञान रहित विषयासक्त झूठे मत रूप अंधकार में पड़े हुये हैं और इतने पर भी उन गुमराहों को संतोष होय सो नहीं अपनी चुस्त अकली व अति निंदक उमग से अपना धन खर्च कर जाहिल आदिमियों को अपना अशुद्ध मत कबूल कराने में तत्पर हैं॥ हमारी रसाई अरब वारों तक बख़ूबी है उस के द्वारा हम वैदिक मत के सही२ ख्यालात तमाम ईसाई मुल्कों में फैला देना चाहते हैं और जिन लोगों को जे ईसाई महा मूर्ख बतला कर अपने मत में लाना चाहते हैं उन को चिताना व उन पर ईसाई मत की भ्रष्टता व मिथ्यात्व प्रकाशित कर देना हमारा ऐन मनोर्थ है॥ इसी तरह आर्य्यावर्त्त के प्राचीन ग्रंथ वेद शास्त्रों का जो इन दुष्टों ने विपरीत अर्थ प्रकाशित किया वह अब हम सत्य२ छपवा कर इन की चालाकी और दुष्टता स्पष्ट करना चाहते हैं॥ अगर आप हमारी सभा की मेम्बरी की सनद स्वीकार कर लेवें तो हम को बड़ी प्रतिष्ठा और इज़्ज़त मिलेगी और आप की कृपा व मिहरबानी और सहायता से हम को बड़ा ही ज़ोर बंधेगा॥ हम अपने तईं आप के शिष्य गणों में स्थापित करते हैं॥

राह भूले हुओं (१)
तीक्ष्ण बुद्धि (२)

जिस पाक काम में आप संसक्त हैं शायद आप केभी हम से कुछ सहायता उस में पहुंचे क्योंकि हमारा मैदान जंग कन्या कुमारी से हिमालय तक फैला हुआ है अर्थात् सारे हिंद में जो हम चाहेंगे वह कर सक्ते हैं ॥ स्वामी जी महाराज आप अपने सहसील व्यसनियों[1] के स्वभाव को खूब पहिचानते हैं इसलिये निश्चय है कि हमारे दिल का भी हाल आप पर छुपा न रहा होगा हम वारं वार प्रार्थना करते हैं कि आप हमारी तरफ़ परम कृपा व दया दृष्टि से निहारिये ॥ हम सच कहते हैं कि हम आप के शरणागत आप की चरण रज बन कर होते है न किसी अहंकार व कपट से हमारी यह दीनता है ॥ निश्चय जानिये कि हम आप की शिक्षा लेने और उस कर्तव्य के करने को मुस्तैद व उपस्थित हैं जिस की कि आप हम को आज्ञा करें ॥ जो आप हम को एक पत्र[2] लिखेंगे तो जान लेवेंगे कि हम लोग ठीक २ क्या जिज्ञासा[3] रखते हैं ॥ निश्चय है कि जो हम चाहते हैं वह आप हम को ज़रूर अर्पण करेंगे ॥

॥ अथ परम प्रतिष्ठित साहब मैं हेनरी एस आलकाट
॥ ईश्वर परिज्ञान समाज का सभापति यह पत्र सभा
॥ की तरफ़ से आप को बडी नम्रता पूर्वक लिखता हूं ॥

(२ पत्री)

२१ मई सन् १८७८ ईसवी

बनाम हरिश्चंद चिंतामणि बम्बई

(१) अपने से स्वभाव और शौक के रखने वालों ॥ (२) आई मीले को कहते हैं
(३) जानने की इच्छा

रे अजीज भाई में शहर न्यूयार्क से रुकसत होने को ही हूं आराम समुद्र पार पाना चाहता हूं और मेरा वापिस आना जल्द मुमकिन नहीं और में नहीं जान सक्ता कि में यूरुप या लक्षया आर्यावर्त्त में कितना ठहरूंगा ॥ २५० जिल्द किताबे और मुजिल्लिद और इतनी ही गैर मुजल्लिद और कुछ सभा पति की दी हुई हैं वह सब सीधी आप। के पास बम्बई भेजता हूं अगर मुझ को मेरी मौत आप के पास न पहुंचने दे तो आप सब किताबें मिहरबानी करके किसी आर्य समाज के नज़र कर दीजिये और जो में अपने स्वदेश आर्यावर्त में पहुंचा तो और बहुत सी किताबें जिस आर्य समाज को आप बतलावेंगे उसके नज़र करूंगा सिवाय मेरे अलकाट साहब भी बहुत सी किताबें लावेंगे में यक़ीन करता हूं कि आप मेरी इस तकलीफ़ दिही पर नाराज़ न होंगे॥ यक़ीन फ़रमाइये व सच जानिये मुझ को ऐसी ख़ुशी कभी नहीं होती जैसी कि आर्यावर्त्त को चिट्ठी लिखने और वहां से आई हुई चिट्ठी के पढ़ने के समय होती है ॥ दर हक़ीकत उतनाही जीतव मेरा सफल होता है॥ फ़क़

॥ दस्त ख़त ऐच पी ब्लवेट्स्की

(३ पत्री)

२१ मई सन् १८७८ ईसवी
बनाम हरिश्चंद्र चिंता मणि

रे मेरे अज़ीज़ भाई में अपनी बहिन की चिट्ठी में कुछ सतरें बढ़ा कर लिख ता हूं मालूम कीजिये कि मैंने चि

पढा
द्दी को श्रोर मैं उसकी तजवीज की हुई राय को अधिक तर पसंद करता हूं कि हमारी यह सभा आर्य समाज आर्यावर्त्त की एक शाखा प्रसिद्ध होजाय श्रोर महाराज पंडित दयानंद स्वरस्वती जी व मेरी हिदायतों के नीचे रहे श्रोर हम सब लोग बडे भारी उसताद व सन्मार्गप्रवर्तक व दाना व साफ़ पाक श्री स्वामी जी महाराज की सेवा स्वीकार करें क्योंकि हम बहुत बड़ी व भारी फलसिद्धियों के उम्मेद्वार हैं हम को मुताबक़ आप की तजवीजों के बहुत कुछ करना है अगर हुक्म होतो दिल से साथ होकर काम करें ऐसा होने से हम बहुत भारी कामों की प्रत्यक्षता दिखला सकेंगे॥ प्रार्थना करता हूं कि आप मुझ को अपना भाई ख्याल करें॥ फ़क़

(ह· एचसी एस अलकाट)

(४ पत्री)

२२ मई सन् १८७८ ई॰ सभान्यूयार्क बनाम श्री स्वामी जी सर्दार आर्य समाज आर्यावर्त्त

श्रीमहाराजाधिराज मैं आप को अदब के साथ खबर करता हूं कि आज २२ मई सन् १८७८ को सभा हुई उसमें सभा पति व एविल्डर साहब नायब सभा पति श्रोर खत किताबत के कारकुन एच·पी· ब्लिवैटस्की आदि ने सुसम्मत श्रोर एक चित्त होकर यह तजवीज़ की कि हमारी यह खुदाशनाश सभा आर्यावर्त्त के आर्य समाज के साथ मिल कर "परमेश्वर परिज्ञान आर्य समाज आर्यावर्त्त

(१) उत्तमोत्तम मार्ग पर चलाने वाले (१) परमेश्वर ज्ञ

शाखा" नाम से प्रसिद्ध होवे और हमारी ख़ास सभा त
था युरुप व अमेरिका के और सब नगरों की शाखा सभा
ओं के लोग अब से श्री स्वामी दयानंद सरस्वती जी को कि
जो आर्य समाज के बानी और सत्य मार्ग प्रदर्शक हैं अपना
सर्दार समझें इस लिये हम लोग आप की रज़ा मंदी औ
र उन हिदायतों के इन्तिजार में हैं जो आप परम कृपा
कारि के हम को समर्पण करें॥ फ़क़

(द० अगस्टस गस्टमरे कार्डि सेक्रेटरी)

(५ पत्री)

२३ मई सन् १८७८ ईसवी शहर न्यूयार्क से बनाम हरिश्चंद्र चिंतामणि बम्बई

अज़ीज़ भाई आप की चिट्ठी २९ तारीख गत माह की लि
खी हुई आई उस के पढ़ने से मालूम हुआ कि हम आप के
उस जवाब के इन्तजार में न बैठ रहे जब तक कि आप ह
मारी सभा का अपनी आर्यावर्त्त की सभा की शाखा हो जा
जाना पसंद करना हम को लिखें कल एक सभा हुई उस
में बहुत से मेम्बरों ने जो हाज़िर थे एक मत होकर आप
की इस राय को कि दोनों सभा मिल जांय और इस सभा का
नाम भी बदल जाय मंजूर किया॥ इस लिये इस पत्र के सा
थ जरूरी छापे का सार्टीफ़िकट भेज कर आप से अर्ज़ की
जाती है कि आप मिहर्बानी करके इस को मनो वांछितस्था
न पर पहुंचा देवें॥ मैं एक नई तरह का डिपलोमा अ
र्थात् सनद का मसौदा (जो हम जारी करना चाहते हैं)
व ग़र्ज़ कि आप और कोई अच्छी तर्कीब न निकालें भेजता

हूं॥ इस नई रीति की सनद का छपवा देना इस गरज से कि लिखने की तकलीफ़ मिट जाए मुनासिब जाना जाता है॥ और जो कि आपके समाज के श्रेष्ठ सरदार स्वामी जी महाराज हम से इस क़दर दूरी पर हैं कि हम हर एक सनद को उन के दस्त खतों के लिये वार वार नहीं भेज सक्ते इस कारण हम बड़े अदब के साथ प्रार्थना करते हैं कि वेद् स सनद के नियत किये हुए स्थान पर संस्कृत या और किसी भाषा में अपने दस्तूर के व मूजिब अपने हस्ताक्षर या मुहर करते होवें तो मुहर मिहरबानी कर के कर देवें॥ ताकि हम उस सनद की बहुत सी नकलें छपवा कर दुनियां भर के अपने मेम्बरों के पास भेज देवें और वे लोग पुरानी सनद की जगह इस नई सनद को अपने पास रक्खें॥ में अपने परमेश्वर पारि ज्ञान सभा के सब सर्दारों से इस बात पर अत्यंत प्रसन्न हूं कि जो उन्होंने दोनों सभाओं का एक हो जाना बड़ी ख़ुशी व शौक़ से स्वीकृत किया और ख़ास कर बड़ा सुकर गुज़ार हूं प्रोफ़ेसर विलडर साहब की रजा मन्दी का कि जो बड़े विद्वान और बहुत अच्छे हमारे अव्वल दर्जे के नायब सभा पति हैं मुझे निश्चय है कि जो आप उन को जानते होंगे तो उन की बड़ी इज्ज़त करते॥ फ़क़्त॥

(द० हेनरी एस अलकाट सभापति)

(६ पत्री)

२६ मई सन् १८७८ ई०

बनाम हरिश्चंद्र चिंतामणि बम्बई

हम आज श्री स्वामी दयानंद स्वरस्वती जी महाराज के उस कृपा पत्र के आने से कि जो उन्होंने हमारे जावत्र की चिट्ठी के

जवाव में भेजा है अत्यंत प्रसन्न हैं॥ हमारी बड़ी इज़्ज़त केवल इसी बात से नहीं हुई कि उन्होंने हमारे डिपलूमा को मंज़ूर कर लिया वल्कि इस बात से ज़्यादा तर हुई कि उन्हों ने अपनी राय को मिहरवानी के अलफाज़ों में ज़ाहिर कर के भेजा मैं अपनी उस खुशी को आप पर प्रकाशित नहीं कर सक्ता जोकि हमारे और आर्यावर्त्त समाज के भाई चारा होजाने से हुई॥ आपका सुवारिक नामा॥ समुद्र उल्लंघन करके हमारे पास पहुंचा उस से ऐसी खुशी हुई जैसी कि जंगल में चारों तरफ़ जंगली जान वरों से घिरे हुऐ मुसाफ़िर को बचाने वाले की आवाज़ पाने से होती है क्यों कि इन ईसाइयों से भेवढ़ कर दुश्मन हमारे लिये जिन्हें वे काफ़िर व मूर्त्ति पूजक कहते हैं और कौन जान वर होंगे मगर जब आपका हमारे ऊपर कृपा का पंजा है तो हम दुश्मनों से विलकुल नहीं डरते फ़क़ मेरा सलाम॥ द॰ अलकाट

(७ पत्री)

३० मई सन् १८७८ ई॰

वनाम महाराज हरिश्चंद्र चिंतामणि

अज़ीज़ भाई हर एक मेम्बर के पास नई सनद भी भेज दो जो परम प्रतिष्ठित श्री स्वामी जी महाराज हमारी सभा को अपने हिन्दुस्तानी आर्य समाज की शाखा हो जाना पसंद कर लेते जिस वक़ वे हमारी प्रार्थना स्वीकृत करेंगे उसी वक़ हम नवीन सनद अपने सभा सदों को बांट देवेंगे इस लिये मैं इन्तज़ार में हूं॥

द॰ एच एस॰ अलकाट

(८ पत्री)

ब्राडवे नम्बर ७१ न्यूयार्क ५ जून सन् १८७८ ई॰

व नाम परम प्रतिष्ठित श्री दयानंद स्वरस्वती जी॥

ऐ महाराजाधिराज आप का वह कृपा पूरित पत्र जो आपने परम
दया दृष्टि पूर्वक भाई हरिश्चंद्र चिंतामणि के कहने से हमको भे
जा वह खैरियत पहुंचा आपने जो आशीर्वाद हम को और हमा
री महननों को दिया कि तुम सदा स सब्ज़ और तन दुरुस्त रहो
इस के सुनने से ईश्वर परिज्ञान सभा के तमाम मेम्बर अति प्र
सन्न होकर आप का धन्यवाद करते हैं कि ईश्वर आप का कयो
म इस ज़मीन पर जब तक कि आप का नेक काम पूरा हो जाय बहु
न आनंद से रक्खे और मनुष्य जाति आप की शिक्षा सुनने औ
र उस से लाभ उठाने के लिये सदा तत्पर रहै॥
(२) ऐ महाराजाधिराज आपने सब की भलाई के लिये जो
परमेश्वर के स्वभाव और गुणों का वर्णन किया और जिसका
ध्यान करना आप अपने शागिर्दों को बतलाते हैं वह बहुत ठी
क है लेकिन उसका और उस के जानने की विद्यायें का जानना
बहुत मुश्किल है ख़ास कर हम से नालायकों को वह बहुमू
ल्य पदार्थ कि जिस के बतलाने का आपने वायदा फर्माया है॥
उस वक़्त तक कि हम अपना तमाम वक़्त उस बेश क़ीमती वि
द्या सीखने में सर्फ़ न करदें॥
(३) मैंने अपने भाई चिंतामणि को वह पत्र जिस में इस स
भा के सब मेम्बरों की सम्मति से नियम आदि नियत की गई
है भेज दिया है उस में यह बात नियत की गई है कि यह समा
ज आर्य समाज की शाखा कहलावे इस शर्त पर जब कि आप
हमारी कार्रवाई को पसंद करें हम जानते हैं कि यावत मनुष्य आ
र्यौंही की औलाद हैं और ज़िमीनी और आसमानी पदार्थों के
परिज्ञान की विद्या आर्यावर्त्त से ही हम तक पहुंची है हम को

तक अति दुर्लभ है जब

(१) हरेफरे (२) निरोगी (३) स्थिर (४) महाहै

वडा लाभ होगा जो आप हम को आज्ञा देवेंगे कि हम अपने तई आप का शागिर्द अर्थात् विद्यार्थी बतलावें और आप का नाम अपना गुरू व बाप व सर्दार धरें हम सदैव ऐसेही काम करने की कोशिश करेंगे कि जिन से आप के भारी कृपा पात्र रहसकें गुरूजी महाराज हम बिलकुल नादान हैं हम को ज्ञान की राह बिलकुल नहीं मालूम आप हम को शिक्षा कीजिये और बतलाइये कि हम को क्या कर्त्तव्य है और उस को हम किस तरह से करें इस लिये से इन्तजार में हैं॥

(४) यहां के आदमी बड़े कमीने व निरंक और अज्ञानी हैं और इन का मज़हब ख़ास विषया सक्ती है और जो कर्म कि मनुष्य को तन मन से त्याज्य कहा है उसी को उन्होंने स्वीकृत कर रक्खा है इन्कीं और इन के गिरजों की तड़क भड़क से इनका वाह्य और अंतरीय ज्ञान स्पष्ट होता है उन की बुराइयां और गुनाह उन के मखमली और रेशमी कपड़ों और गुदगुदे तकियों व पलंगों के कोनों में वे धड़क बैठे हैं उन के महन्त और पुजारी कुशिक्षित और अपराधी व अहंकारी मुष्यों को वस हो रहे हैं जो लोग उन्हें वहुत सा धन देते हैं उन के स्वर्ग में ले जाने और देवता गणों के साथ बात चीत कराने का ये लोग वायदा करते हैं॥ परंतु तिस पर भी प्रत्येक शहर और क़सबों में वहुत से समझदार मर्द व औरत ऐसे भी हैं कि जो आर्य समाजमें अति प्रीति से मिल जावें लेकिन यहां कोई पंडित व महात्मा ऐसा नहीं कि जो उन अच्छे व नेक लोगों को इकट्ठा कर के तसी हत देवे इस कारण हम को ज़रूर है कि अख़बारों के द्वारा उन को सत्य

(१) ऐयाशी

मार्ग का रास्ता बतलावें जो कुछ कि हम अपनी छोटी बुद्धि से कर सक्ते हैं उस के करने के लिये आप की हिदायतों के आने पर मुस्तैद हैं हम प्रार्थना करते हैं कि आप को जिस वक्त आप के आवश्यक कामों से फ़ुर्सत मिले हम को जल्द कुछ नेक हिदायतें मिहर्बानी के साथ आप अपेरा करें॥

(५) आप कृपा कर के आर्यावर्त के तमाम समाजों पर यह प्रकाशित कर दीजिये कि पृथ्वी के परली तरफ़ आदमी और औरतों का एक थोक ऐसा है कि जो आप के अत्युत्तम मत के अनुसार चलने वाला और आपही के मानिंद पुनर्जन्म का विश्वास करने वाला तथा और२ बातों में भी आपही के बर्ताव के अनुसार चलने वाला है चूंकि हमारे और उन के दर्मियान भाई चारे का संबंध है और परस्पर प्रीति की वृद्धि हो रही है इस कारण हम अपने आर्य भाइयों के पास बिरादराना मुहब्बत का पयाम भेजते हैं॥

(६) हम आप से पूछते हैं कि आर्य समाज के नियम क्या हैं और उस की कार रवाई किस तरह होती है और उस में ख़ास कर कौन भरती होसक्ते हैं कौन नहीं और फ़रमाइये कि इस मुल्क और युरूप में दीगर मज़हब के साथ हम को किस प्रकार बर्तना और कौन सी पाश्चिमी ज़ुबान की किताबें परमेश्वर परिज्ञान के लिये पढ़ने को बनाना चाहिये और मनुष्य की प्राप्ति व परिणाम व कुदरतें क्या क्या हैं और वे नियम जो कि हिन्दुस्तान में जारी हैं कितने बदले जांय कि जिस से वे पाश्चिम देशीय लोगों की प्रकृति के उपयोगी हो जांय हम को यह जानना अवश्य है कि नास्तिक लोग कि जिन की तादाद लखूखा है उन से आत्म

(१) मित्ररीत्यनुसार प्रीति भरा संदेशा (२) वेदनिंदक को कहते हैं

अर्थात् रूह की मत्यस्तता व कारण व असर व संबंध व प्रकृति औ र हानि व लाभों के बावत हम कों क्या क्या बात चीत करना चा हिये क्योंकि हर आदिमी यह ख़्याल करता है कि बाद मरने के क्या कैफ़ियत हर एक जीव की होती है और हर एक का यह भी ख़्याल देखा जाता है कि वह मरे हुऐ कामी दर्द करता है दे खिये मा अपने मरे हुए बच्चे को अपने सीने से कभी जुदा न हीं करती न कोई औरत भूलती है अपने पति को और न क भी कोई आशक़ अपने दिल से जुदा करता है अपने माशूक को पर हमारे कुछ ख़्यालात और ही हैं लेकिन यहां के लोग अपनी बात पर मरते हैं और हमारे दृढ़ विश्वास मिटाने में व हुत कुछ ताक़त के साथ पेश आते हैं लाखों आदमी मुद्दत के मरे हुऐ रिश्ते दारों का पूर्व रूप में देखना और उन से बात चीत करना बयान करते हैं ऐसे लोगों के निस्बत हम क्या ख़ याल करें और क्या उन से कहें और उन के विश्वासों को कि न सबूतों के साथ झूठा साबित करें आप की चिट्ठी के उस हि स्से से जहां कि आपने मुर्दे को ज़िन्दा करना इत्यादि करा माती बातों का ज़िकर कर के लोगों की नास्तिकता और मू र्खता साबित की है ज़ाहर होता है कि आप ऐसी बातों को झूठ समझते हैं और आत्म ज्ञान की शक्ति और फ़्लासफ़ी के प ढ़ने से बहुत हेच समझते हैं यह बुद्धि मानी की बात है हम भी ऐसा ही समझते हैं लेकिन यहां के आदमी मिस्ल दीगर जगह के करामाती बातों के ही क़ायल हैं हर्गिज़ इल्म नवई को प संद नहीं करते और आत्मा और परमात्मा के सच्चे २ नियमों पर भी वे यक़ीन नहीं लाते शायद हम से तक़रीर इल्म फ़्ला

(२) बड़े प्यारे (१) न्याय मिश्रित पदार्थ ज्ञान विद्या (२) तुच्छ (३) शक्ति

सक्ती उन के रोवरू ठीक न वन पडती हो इस वास्ते हम आपके के चरणों में सिर नवाते हैं॥

(७) मैं ख्याल करता हूं कि पश्चिम देश के निवासियों के सामने असली व सत्य२ मन रंजक वेदों का आशय प्रगट करने से वहुत कुछ तरक्की हो सक्ती है क्योंकि आमेरिका का एक नामवर अख़वार नवीस जो हमारी सभा का मेम्वर भी है कहता है कि आज कल सव से ज़ियादा पूर्वीय मज़हव की अच्छी वातों का ज़िकर हमारी ज़वान में किया जावे और यह भी कि ईसाइयों की रीति और रस्म और विश्वास कहां से निकले और हर नया मज़हव आर्य मत से किस तरह निकला दूसरा मेम्वर जो कि युरुप की ज़ुवानों को अच्छी तरह जानता है और अंगरेजी ज़ुवान की वुनयाद के वावत एक किताव लिख रहा है शिकायत करता है कि ईसाई निसहीवर ने जेंड एवेस्ता का तर्जुमा विगाड दिया है और सुरू से प्रार्थना करता है कि जव आप हिन्दुस्तान को जायें तो पश्चिमी ज़ुवान की पैदायश और इस तरफ़ के निवासियों का हाल कि वे पूर्व दिशा से कव आये ठीक२ भेजना इस में कुछ शक नहीं कि पश्चिम के लोगों को आर्य लोगों से वहुत कुछ सीखना है कि जिस को मुफ़स्सिल मैं कह नहीं सक्ता हम आप से वहुत दूरी पर हैं और खत किताबत का जरिया उस्ताद और शागिर्द के दरमियान ठीक नहीं और न उस से काम चलता है इस कारण हममें से चंद आदमी आर्या वर्त्त में आकर यहां के शिष्य जनों की शिक्षा के निमित्त पढ़ना अवश्य समझते हैं ख्याल करते हैं कि वहां दो

(१) ग्रंथ कार का नाम (२) ग्रंथ का नाम

तना सीख जावेंगे जितना कि यहां बीस बरस में मुश्किल से सीख सकेंगे जो कि मनुष्य के जीने का कुछ ठीक नहीं इस लिये किसी वृद्ध व तरुण को भी गफ़लत से अपना वेष्टा की मती समय वृथा गवांना न चाहिये इसी वजह से हम में से चंद आदमी अपने अर्थ सिद्धी के लिये आप की ख़िदमत में बहुत जल्द हाज़िर होना चाहते हैं परन्तु जब तक हम अमेरिका से चलें हम बड़ी नम्रता से प्रार्थना करते हैं कि आप हमारी पूर्वोक्त सब बातों का उत्तर कृपा करके ज़रूर अता फ़र्मावें विशेष क्या अर्ज़ करूं॥ मैं बहुत बहुत मिन्नत व समाजत के साथ अपनी ओर इस सभा की तरफ़ आदाब बजा कर यह पत्र आप को लिखता हूं और आप की हमेशा तन दुरस्ती और ख़ुशी रहने की दुआ मांगता हूं

फ़क़त द० आप का शागिर्द खाकसार सर हेनरी अलकाट सभा पति॥ इन ऊपर लिखित पत्रों के अवलोकन के समय उल्था कार पंडित गोपाल राव हरी वज़ीटर ज़िला फ़र्रुखा वाद को एक प्रसंग याद हो आया है वह इस के साथ पाठक गणों को विदित होने के लिये लिखना उचित जान कर लिखा जाता है पूरे ३२ महीने की बात है कि श्री स्वामी जी महाराज जो उन्नाव नगर में सुशोभित हैं हमारे परम मित्र श्री युत लाला जगन्नाथ प्रसाद साहब आली रईस की विश्रांत पर थोड़े ही दिनों से आ विराज मान थे उन के निकट २३ मई सन् १८७६ ईसवी को प्रातः काल के समय एक यहां के बड़े पादड़ी साहब दो ईसाइयों सहित पहुंच कर अपनी रीत्यनुसार स्वधर्म संबंधी वार्त्तालाप करने लगे पर सहस्त्रांशु के सनमुख क्या विचारे जुगनू का तेज अर्थात् साहब बहादुर ला जवाब हो

१ कुन्न से (१) शुद्ध शब्द विज़िटर है

उठ खड़े हुये उस वक़्त उन की मुख श्री देखने के बहुत से आदमी भी उपस्थित थे सन्मुख उन के साहब बहादुर प्रणाम कर कहने लगे कि पण्डित जी महा राज यक़ीन हुआ कि आप हमारे जल्द मताश्रित हो जावे गें उस पर श्री महाराजाधिराज आनंद रूपने साफ़ यह उत्तर दिया कि यह तो परम असंभव है परंतु अचिरात् यह देखो गे कि यावत् ईसाई लोग वैदिक मत की प्रसंशा करकें तदावलंबी होने की प्रार्थना करें गें कहो भाई इस को वाक्य सिद्धि कहो गे या नहीं इतने पर भी जो कोई विगतनिद्रन होवे तो हमारी जान सरासर उस का मति जाड्य है॥

(विद्वत्सु किम्बहुनेति)

१४ जनवरी सन १८७८

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु. परिग्रहण क्रमांक 453

(१) जल्द (२) चेतन्न (३) मूर्खता (४) ग़ाफ़लमन्दों की ग़िया दह लिखने की ज़रूरत नहीं